<u>दिनांक 6 मार्च 2023 को जालंधर शहर में हुए वचनों का संक्षिप्त वर्णन</u>

सभी सज्जनों को जय सीता राम जी।

हम आशा करते हैं कि आप सभी नाम ध्यान में ठीक से जुड़े हुए होंगे। क्या ऐसा ही है जी?

मौन।

मौन नहीं रहो । अपितु इस बात का उत्तर अपने आप से लो और बताओ कि अपना-अपना परिणाम जानकर किस-किस का उत्साहवर्धन हुआ है व किस किस को शर्मिंदगी का एहसास हुआ है?

इस संदर्भ में सज्जनों जिनको शर्मिंदगी का एहसास हो रहा है वे जान ले कि यह कुपुत्र बनने की बात है, अतः आपको सुझाव है कि समय रहते ही सुधर जाओ। इसके विपरीत इस जांचना के उपरांत जिसका उत्साहवर्धन हुआ है वे जान ले कि वे ईश्वर के सुपुत्र हैं। ऐसे सुपुत्रों के लिए आदेश है कि वे समय रहते ही परोपकार कमाना आरंभ कर दें। आगे सजनों जानो कि निष्काम सेवा ही परोपकार है। कैसे ? यह हम तभी बताएंगे जब आप स्वयं में परिवर्तन लाकर, द्वारे की नीतियों के वर्त वर्ताव में सुदृढ़ता लाने का संकल्प मजबूती से ले लोगे।

तो क्या तैयार हो?

हां जी।

समय की चाल को सज्जनों समझो और जान लो कि कैसे सतवस्तु के कुदरती ग्रंथ द्वारा हमें बार-बार सचेत कर सद्-मार्ग पर आने का आवाहन दिया जा रहा है। इस आवाहन को सज्जनों अनसुना मत करो क्योंकि यह उस कुदरत की आवाज है जिसने आपकी बनत बनाई है। इस विषय में यदि कुदरत की बात को अनसुना किया तो आपकी बनत बिगड़ भी सकती है यानि आपको मानव चोले से हटकर अजीबो गरीब अनेकानेक योनियों में जन्मने व मरने का दुःख भोगना पड़ सकता है । सब कुछ आप के चयन पर निर्भर करता है। अतः जैसा कर्म करोगे वैसा ही फल आपको प्राप्त होगा। आज की बात को सजनों घर जाकर भी सोचना - समझना, विचारना और फिर अवविचार छोड़कर विचार युक्त रास्ते पर प्रशस्त हो जाना। इसी में सज्जनों आपकी व आपके परिवार की भलाई है। यहां जान लो कि अगर आपने इस कुदरती ग्रंथ की पावन विचारधारा को अपना लिया तो आपके बच्चों, सगे संबंधियों, मित्रजनों सभी के अंदर यह विचारधारा संचरित होने लगेगी। इस तरह मात्र आपकी बुद्धि के ठिकाने आ जाने पर यानि आत्म स्मृति में आ जाने पर, आपके साथ जितनों का जीवन जुड़ा हुआ है उन्हें परमार्थ के रास्ते पर प्रशस्त करना सहज हो सकता है। जान लो यह आपका कर्तव्य भी है। अगर इस कर्तव्य से विमुख होकर अपने जीवन का निर्वहन करते हो तो आप न केवल अपने अपितु उन सब के भी दुश्मन

साबित हो सकते हो जिनका जीवन आप के संग जुड़ा हुआ है । अब यह आप देखो कि आपने उनकी उन्नति का साधन बनना है या बाधक बनना है। मत भूलो कि बाधक अपराधी होता है और उसे उस द्वारा किए अपराध की सजा किसी न किसी रूप में मिलती ही मिलती है। हम तो उन रूपों का बखान भी नहीं कर सकते परंतु आज की बात को दृष्टिगत रखते हुए प्रार्थना अवश्य कर सकते हैं कि सज्जनों अपने साथ व अपनों के साथ ऐसा मत होने दो अन्यथा कहना न मानने के कारण अन्य पर दोषारोपण मत करना।

इसके अतिरिक्त सजना शरीर के समुचित रख-रखाव व मन की शांति के लिए क्रमशः जो सात्विक आहार व शास्त्र विहित विचारों का सेवन करना आवश्यक है, उन्हें नीतिबद्ध रूप से अपनाने के प्रति अवश्य पुरुषार्थ दिखाना। यहां सज्जनों याद रखो की मोक्ष प्राप्त करने हेतु मन को सात्विक विचारों की खुराक प्रदान करना आवश्यक है। अन्यथा यह मन आपकी होश भुला देगा और अपनी मत पर चलाता व नचाता हुआ, स्वार्थी बना देगा । ऐसा करने पर कभी रोओगे व कभी अन्य को कोसोगे। ऐसा न हो इसीलिए सजनों आज की बात पर विचार करना। फिर कह रहे हैं कि यदि आज के बाद भी ऐसी लापरवाही की तो इस गुनाह का दंड अवश्य भुगतना पड़ेगा। क्या जानना चाहते हो कि इस गुनाह का दंड क्या होता है। तो जान लो ऐसा होने पर मन के साथ-साथ , आपकी बुद्धि भी भ्रष्ट हो जाती है और आप आत्मविस्मृत हो जाते हो यानि यह भूल जाते हो कि मैं कौन हूं? मेरी वास्तविक ताकत क्या है

? मेरा वास्तविक धर्म क्या है और मैं इस मृत लोक में क्या करने आया हूं? सज्जनों हम पूछते हैं कि क्या आप ऐसा ही जीवन चाहते हो? क्यों कर सालों साल सत्संग में आने के बावजूद भी अब तक आपकी बुद्धि ठिकाने नहीं आई ? क्यों कर आपने मन की चंचलता पर अब तक अंकुश नहीं लगाया और उसे सात्विक विचारों की खुराक दे आत्मज्ञान अनुरूप ढाला? अब तक नहीं किया तो सज्जनों अब तो अपनी बुद्धि ठिकाने ले आओ और जो विशेष विवेक शक्ति ईश्वर ने आपको भले बुरे का ज्ञान कराने हेतु प्रदान की है उसका इस्तेमाल करना आरंभ कर दो। सतयुग के इंसान ऐसे ही ताकतवर मानव होते हैं। वह कभी झूठ नहीं बोलते क्योंकि सत्य उनके हृदय में प्रकाशित रहता है। इस तरह कुदरत ने मानव को मानवता में साधे रखने की पूरी व्यवस्था हमारे भीतर ही की हुई है। अतः हमें इस व्यवस्था का लाभ उठाना चाहिए। माना कलयुगी माता पिता अपने बच्चों को इस व्यवस्था से अपरिचित रखते हैं यानि अध्यात्म का ज्ञान प्रदान नहीं करते और दुनिया में कुरीतियों व छल कपट युक्त अविचार के रास्ता पर चलना सिखाते हैं, परंतु आपके पास तो सतवस्तु का कुदरती ग्रंथ है। इसमें विदित आत्मिक ज्ञान को चरितार्थ कर आप अपने सज्जन बन सकते हो और जिस कार्य पूर्ति हेतु यह मानव चोला मिला है उस कार्य को सिद्ध कर विजयी हो सकते हो। अतः जीवन उद्धार करने व अपना जीवन आनंदमय बनाने हेतु आप तो आत्मज्ञान प्राप्त करो ही, साथ ही जो जीव रूप में आपके घर आए हैं उनको भी मानवता में ढालने हेतु उद्यम दिखाओ। सज्जनों फिर कह रहे हैं कि कई जन्मों बाद प्राप्त हुए

इस सुनहरी अवसर को हाथ से मत जाने दो अन्यथा तलियां मल-मल पछताओगे। इस बात को सज्जनों आप भी समझ लेना व अन्य को भी समझा देना। साथ ही जो सज्जन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के बावजूद, नीति विरुद्ध चलने का गुनाह कर रहे हैं, वे भी आज की बात को चेतावनी समझ कर समय रहते ही संभल जाना। याद रखो यदि आज की बात को अनसुना कर अपने अंदर स्वाभाविक परिवर्तन लाने का प्रयत्न नहीं किया तो बचाव नहीं हो सकेगा। इस संदर्भ में हम तो यही कहेंगे कि कलियुग की मलीन स्वाभाविक पोशाक त्याग कर सतयुग की सुंदर स्वाभाविक पोशाक पहन लेना और सच्चरित्रता के प्रतीक बन चरित्रवान कहलाना। ठीक है जी।

हां जी।

तो फिर आज और अभी अपने जीवन चरित्र पर नजर डालो और जांचना करो कि अभी तक चरित्रवान बने हो या दुष्चरित्रता में फंसे हुए हो?

मौन।

बताओ कि ईश्वर चरित्रवान पर प्रसन्न रहते हैं या दुष्ट चरित्र इंसान पर?

मौन।

इस जांचना से आपको समझ आ जाएगी कि मैं ईश्वर के करीब हूं या नहीं यानि मैं ईश्वर के संरक्षण में बना हुआ हूं या जो औरों का संरक्षण है उनके अधीन हो गया हूं ? इस प्रकार मैं ईश्वर की बात नहीं सुनना

चाहता न ही मैं उस अनुसार कुछ करना चाहता हूं। इस विषय में सत्यता से अपना आत्मनिरीक्षण करो और अपना नतीजा आप लो।

यहां हम तो आपसे यही कहेंगे कि अपने ख्याल का नाता जो सर्वशक्तिमान है व जिसने आप को इंसान बनाया है उसके साथ ध्यानपूर्वक जोड़ो। तभी सज्जन क्या है और श्री साजन क्या है इस सत्य को जान पाओगे। अन्यथा शरीरों में उलझे रहने पर आपके दिल और दिमाग की पहुंच उस आत्म स्वरूप तक कदाचित नहीं हो पाएगी। आत्म स्वरूप का साक्षात्कार करने हेतु सज्जन श्री शहंशाह हनुमान जी के द्वारे से जो युक्ति आपको प्राप्त हुई है उसका युक्तिसंगत प्रयोग करने की कला में निपुण बनो। जानो तभी आपके जीवन का कार्य सिद्ध हो सकता है और आप सुमितवान बन आत्मविजयी हो सकते हो। इसके विपरीत यदि ऐसा पुरुषार्थ न दिखाया और हार गए तो दर्शक यानि दुनिया क्या कहेगी? वह तो यही कहेंगे कि इतने साल विजय मंत्र सीखते रहे, सीखते रहे पर फिर भी हार की प्राप्ति क्यों कर हुई? सज्जनों किसी की ऐसी बात आपको न सुननी पड़े इसीलिए सही मायने में आत्मनिरीक्षण करो। याद रखो युक्ति संगत प्रयास करने वाला कभी नहीं हारता, उसका कभी भी अपयश नहीं होता। अतः आलस मत करो। इसके स्थान पर इस मायावी खेल में विजयी होने हेतु युक्तियों का प्रयोगात्मक रूप समझो और तद् अनुरूप अपने भाव-स्वभाव को ढाल कर अच्छे वाले इंसान बन जाओ। अब बोलो :-

सतवस्तु के बाली श्री साजन जी की विजय विजय विजय।

सजनों क्या जानते हो कि श्री साजन प्रभु कौन हैं ?

जानो श्री साजन परमात्मा है और सज्जन आत्मा है। शरीर साधन है। इस साधन के प्रयोग द्वारा हम अपना ख्याल ध्यान आत्म स्वरूप में स्थित कर, एक रूप हो सकते हैं। अतः इस एक रूप की पहचान करने हेतु पुरुषार्थ दिखाओ, पुरुषार्थ दिखाओ और विजयी हो जाओ।

आप ऐसा करने में कामयाब हो इन्हीं शुभकामनाओं के साथ सभी सदस्यों को जय सीता राम जी।